त्रिमासिक कृषि पत्रिका

जवाहर कृषि संदेश

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ (म.प्र.)

वर्ष-6 | अंक- 22 | अक्टूबर से दिसम्बर 2013

संरक्षक
डॉ. व्ही.एस. तोमर
कुलपति, ज.ने.कृ.वि.वि. जबलपुर

मार्गदर्शक
डॉ.पी.के. मिश्रा
संचालक विस्तार सेवायें
ज.ने.कृ.वि.वि. जबलपुर

डॉ. आर.के. पाठक
अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय
टीकमगढ़

डॉ. अनुपम मिश्रा
आंचलिक परियोजना संचालक,
आंचलिक ईकाई-VII
भा.कृ.अ.परि., जबलपुर

मुख्य सम्पादक
डॉ. शैलेन्द्र सिंह गौतम
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
विशेषज्ञ (उद्यानिकी)

सम्पादक मण्डल
डॉ. संदीप कुमार खरे
विशेषज्ञ (पशुपालन)
डॉ. आर.के. प्रजापति
विशेषज्ञ (पौध संरक्षण)
श्री बी.एल. साहू
विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)

प्रकाशक :
कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ (म.प्र.)

सम्पर्क-
फोन : 07683-244934 (ऑ.)
फैक्स : 07683-245034
ई-मेल : kvktikamgarh@rediffmail.com

॥ संदेश ॥

कृषि में मध्य प्रदेश की उत्पादकता के 18 प्रतिशत बृद्धि को मापदण्ड मानते हुये एवं आगे बढ़ाने के लिये कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ के द्वारा खरीफ– 2013 में किये गये सराहनीय प्रयास एवं आगामी रबी 2013 में उत्पादकता को समृद्धि बनाने के उद्देश्य से जवाहर कृषि संदेश अक्टूबर से दिसम्बर– 2013 का प्रकाशन कृषि की उन्नत तकनीको को कृषक भाईयों तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है ।

मुझे आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि इन उन्नत कृषि तकनीकों को अपना कर कृषक भाई अपने उपज में बृद्धि कर सकेगें । मैं कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ द्वारा प्रकाशित किये जा रहें जवाहर कृषि संदेश के प्रकाशन पर अपनी शुभकामनाएँ एवं हार्दिक बधाई देता हूँ ।

डॉ. पी.के. मिश्रा
संचालक विस्तार सेवायें

प्रगतिशील कृषक अमरचन्द्र प्रजापति की सफलता की कहानी

कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ ने कृषि तकनीकी विस्तार हेतु 2007 में ग्राम- नादिया विकासखण्ड- जतारा को अंगीकृत किया। कृषकों के चयन के समय एक युवा बेरोजगार युवक जो खेती के प्रति लालसा रखता था, सीमान्त कृषक अमरचन्द्र के रूप में वैज्ञानिकों ने प्रदर्शन डालने हेतु चयनित किया। कृषि की नवीनतम तकनीकी जैसे- सोयाबीन के रिज फरो प्रजाति बदलाव में सोयाबीन 95–60, उर्द- LBG-20, शेखर-2, गेहू- GW-322,366 आदि का स्वम् के साथ ही गाँव के अन्य कृषकों के यहाँ कराने मे केन्द्र की काफी मद्द की। वर्ष-2009 में जब जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय द्वारा केन्द्र के JS-95-60, का बीज प्राप्त हुआ आपने कृषकों के साथ मिल कर सोयाबीन का बीज तैयार करीब एक लाख रूपये की आमदनी प्राप्त की। तकनीकी के विस्तार ने नये क्रम में वर्ष-2011–12 में केन्द्र के वैज्ञानिकों ने अमरचन्द्र ने पपीता की प्रजाति रेड लेडी को एक एकड़ क्षेत्र में लगाया साथ ही अर्न्तवर्त्ती फसल के रूप में अदरक, लहसुन की खेती कर पुनः एक लाख रूपये की आमदनी प्राप्त की। इसके बाद अमरचन्द्र को केन्द्र ने अर्न्तराजीय भ्रमण में कृषकों के राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु लखनऊ भेजा गया। केन्द्र द्वारा रायसेन कृषि विज्ञान में लगाई की प्रदर्शनी में भी आप का सहयोग एवं उपस्थिति रही। ज्ञातव्य हो कि श्री अमरचन्द्र कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ के वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति के तीन वर्षो तक कृषक सदस्य भी रहे है। वर्ष- 2013–14 मे "आत्मा" द्वारा विकास खण्ड के सर्वोत्तम पुरस्कार प्राप्त करने हेतु केन्द्र द्वारा प्रेरित किया गया। इस क्रम में 15 अगस्त 2013 को आप को माननीय् मंत्री श्री हरीशंकर खटीक जी द्वारा 10,000/- का नकद पुरस्कार प्रदाय किया गया। इसके बाद गुजरात सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कृषक संगोष्टी 9–10 सितम्बर 2013 में भाग लेने गाँधी नगर, गुजरात गये। वहां पर गुजरात सरकार के माननीय् मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 51000/- का नकद पुरस्कार प्राप्त किया। वहां से वापस आने पर कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ द्वारा सम्मान समारोह आयोजित कर सम्मानीत किया गया। इस अवसर पर केन्द्र के वैज्ञानिक श्री बी.एल. साहू, डॉ. राकेश कुमार प्रजापति, डॉ. संदीप खरे एवं कार्यक्रम समन्वयक डॉ. शैलेन्द्र सिंह गौतम ने श्री अमरचन्द्र प्रजापति के उज्जवल भविष्य की कामना की।

सरसों की वैज्ञानिक खेती

- **भूमि-** सभी प्रकार की भूमियों में सरसों की खेती की जा सकती है ।
- **भूमि की तैयारी-** भूमि भुरभुरी नमीयुक्त तथा खरपतवार रहित होनी चाहिऐ। एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा 2-3 जुताई देशी हल अथवा कल्टीवेटर से करें। पाटा लगाकर मिट्टी भुरभूरी कर लें ।
- **बोनी की विधि-** बोनी कतारों में करें। कतारों की दूरी 30 सेमी. रखें। पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी. रखें। बीज की गहराई 2-3 सेमी. रखें।
- **बोनी का समय-** अक्टूबर माह का प्रथम पखवाड़े में बौनी करें ।
- **बीज की मात्रा-** बीज की मात्रा 5 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर रखें।
- **उन्नत प्रजातियाँ-** वरूणा, पूसा बोल्ड, रोहिणी, क्रांति, पूसा जय किसान, जवाहर सरसो-2, जवाहर सरसो-3, लक्ष्मी ।
- **बीजोपचार-** थाईरम दवा से 3 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज उपचारित करें।
- **खाद एवं उर्वरक-** असिंचित अवस्था- 40:20:10 न.फा.पो. कि.ग्रा./हे। सिंचित अवस्था- 80:40:20 न.फा.पो. कि.ग्रा./हे.। 30 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर सल्फर भी दें । नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस, पोटाश एवं सल्फर की पूरी मात्रा बोनी से पहले देशी हल अथवा सीड-ड्रिल द्वारा 6-7 सेमी. गहराई पर दें । बची हुई नाइट्रोजन की आधी मात्रा प्रथम सिंचाई पर टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें ।
- **सिंचाई-** पहली सिंचाई बुवाई के 35 दिन बाद करें। दूसरी बुवाई के 70 दिन बाद करें ।
- **खरपतवार नियंत्रण-** बुवाई के 20-25 दिन बाद निदाई-गुड़ाई अवश्य करें। पौधें घने होने पर विरलन करें। पौधे से पौधे की दूरी 15 से.मी. रहने दें ।
- **माहूँ नियंत्रण-** माहूँ के नियंत्रण के लिये समय पर बुवाई करें, प्रारम्भिक अवस्था पर क्षतिग्रस्त टहनियों को तोड़कर नष्ट कर दें। इमिडाक्लोरपिड 125 मिली. दवा प्रति हेक्टेयर को 600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- **कटाई-** सरसों की फलियाँ 75 प्रतिशत पीली पड़ जाये तब फसल को काट लें। दो दिन धूप में सुखाने के बाद फसल की थ्रेसिंग कर लें ।
- **उपज-**सिंचित दशा में - 18-20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
  असिंचित दशा में- 10-15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर।
- **अंतवर्ती खेती-** सरसों की खेती चना और गेहूँ के साथ मिश्रित रूप में न कर अंतः फसली खेती करना चाहिये। अन्तःफसल पद्धति के रूप में 6 पंक्तियाँ चने की तथा 2 पंक्तियाँ सरसों की लगायें । गेहूँ में अंतः फसल पद्धति 9 पंक्तियाँ गेंहूँ एवं 2 पंक्तियां सरसों की लगाकर अधिक लाभ लिया जा सकता है।

केन्द्र द्वारा आयोजित कृषक प्रशिक्षण

आगामी माह के कृषि कार्य

माह अक्टूबर **फसल उत्पादन**

- सरसों की बोनी के लिए क्षेत्र में उपयुक्त किस्म के प्रमाणित बीज का प्रयोग करें ।
- बारानी क्षेत्र में सरसों की बुबाई 15 अक्टूबर तक एवं सिंचित क्षेत्र में इस माह के अंत तक बुबाई करें । जहां पलेवा करके बुबाई की जानी हो वहाँ प्याजी की रोकथाम हेतु बासालीन 1 लीटर बुवाई पूर्व नमी युक्त भूमि में मिला दें ।
- सरसों उपचारित बीज को 30 से.मी. कतारों में 5 से.मी. गहरा डालें । सिफारिश अनुसार प्रारंभिक उर्वरक का प्रयोग अवश्य करें । अंकुरण के 7-10 दिन के अंदर आरा-मक्खी, पेंटेड बग के नियंत्रण के उपाय करें। निंदाई एवं छँटाई कर सरसों में पौधे से पौधे की दूरी 8-10 से.मी. रखें।
- माह के पहले सप्ताह में अलसी एवं दूसरे सप्ताह में मसूर एवं हरी फली हेतु मटर की बोनी करें ।
- चनें व सरसों की मिश्रित फसल लें ।
- चने की बुवाई सिंचित अवस्था में अक्टूबर अंत तक कर दें । बारानी क्षेत्रों में भी प्रारंभिक उर्वरकों का प्रयोग अव-य करें। बीज जनित रोगों की रोकथाम हेतु बीज उपचार अवश्य करें ।
- चने के बीज को राइजोबियम व पी.एस.बी. कल्चर से टीकाकरण करके बुवाई करें। बुवाई के 25-30 दिन पर निंदाई करें ।
- जौ की बुवाई के लिए उन्नत किस्म के प्रमाणित बीज का प्रयोग करें एवं बीजोपचार करें। समस्याग्रस्त क्षेत्रों में मध्य अक्टूबर तक बुवाई करें।
- शरदकालीन गन्ने की बुबाई करें ।
- मध्य अक्टूबर के बाद गेहूँ की देशी प्रजातियों की बोनी असिंचित तथा हवेली दशाओं में की जा सकती है ।
- बरसीम, जई, रिजका हरे चारे हेतु बोयें ।
- बोनी के बाद उगे हुए पौधों को कीटों के प्रकोप से बचायें ।

उद्यानिकी:-

◈ नींबू वर्गीय फल के पौधों में कैंकर रोग की रोकथाम करें। ◈लहसून की बुवाई इस माह में करें। ◈प्याज की उपयुक्त किस्मों की पौध तैयार करें। ◈कद्दू वर्गीय सब्जियों की देखभाल करें। ◈बटन मशरूम की खेती हेतु कम्पोस्ट बनायें। ◈ पशुपालन :-पशुओं को खुरपका-मुँहपका रोग का टीका लगायें। ◈कृमिनाशक दवा पिलायें ।

अन्य :-

- फसलों में सिंचाई हेतु विद्युत मोटर पंप एवं डीजल इंजिन को तैयार कर निर्धारित स्थान पर स्थापित कर दें।
- सोयाबीन के दूध, पनीर, लड्डू, हलवा, दलिया, पूड़ी एवं चपाती आदि बनाकर विभिन्न प्रकार से खाने के काम में लें ।
- अमरूद, अनार, सीताफल, पपीता, खजूर, तिल आदि मौसमी खाद्य पदार्थो का भरपूर उपयोग करें ।

माह नवम्बर **फसल उत्पादन**

- सिंचित क्षेत्रों में गेहूँ की अनु-ंसित और अधिक उपज देने वाली किस्मों की बुवाई बीजोपचार पश्चात् करें ।
- गेहूँ का बीज उपचारित कर बुवाई करें ।
- गेहूँ की बौनी किस्मों की। बुवाई 4-5 से.मी. अधिक गहराई में न करें। अधिक गहरा बोने से कल्ले कम निकलेंगे ।
- भूमिगत कीड़ों की रोकथाम हेतु क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत या पैराथियॉन 2 प्रतिशत 25 कि.ग्राम चूर्ण प्रति हेक्टेयर भूमि में मिलायें ।
- गेहूँ में प्रथम सिंचाई शीर्ष जड़ जमने की अवस्था पर अवश्य करें एवं नत्रजन उर्वरक की शेष मात्रा की आधी मात्रा सिंचाई के तुरंत बाद दें ।
- प्रथम सिंचाई के 10-15 दिन के अंदर एक निंदाई-गुड़ाई कर खरपतवार निकालें या सिफारिश के अनुसार 2,4-डी चौड़ी पत्ती खरपतवारनाशी दवा छिड़कें ।
- पूर्व में बोई गई जौ की फसल में पहली सिंचाई 30-35 दिन में करें व प्रथम सिंचाई के 10-12 दिन के अंदर एक बार निंदाई-गुड़ाई अवश्य करें ।
- फसल अंकुरित होते समय चूहे विशेष रूप से सक्रिय रहते हैं । अतः चूहा नियंत्रण के कारगर सामूहिक उपाय करें ।
- चने की फसल में सिंचाई उपलब्ध हो तो प्रथम सिंचाई 40-50 दिन पर करें ।
- सरसों में पहली सिंचाई फूल आने से पूर्व करें। नत्रजन की शेष आधी मात्रा सिंचाई के तुरंत बाद दें ।

उद्यानिकी:-

- आम में थालों की सफाई करें तथा बगीचों मे निदाई-गुड़ाई करें ।
- बेर में इस माह कच्चे छोट-छोटे फल बनने शुरू हो गए हैं। अतः नत्रजन उर्वरक दें। बैगर की बसंत कालीन फसल की रोपाई करें ।
- टमाटर की फसल में निंदाई-गुड़ाई करें एवं खरपतवार निकालें ।
- शरद कालीन गन्ने में प्याज, लहसुन, आलू, की सह-फसली बुवाई करें ।
- प्याज की पूसा रैड व एग्री फाऊंड लाईट रैड किस्म की बुवाई करें ।
- धनिये के बीज को बुवाई पूर्व 3 ग्राम थायरम से प्रति किलो ग्राम बीज को उपचारित करें ।
- पशुपालन :-बरसीम, जई को हरे चारे हेतु बोयें। ''हे'' व साईलेज बनायें ।

माह दिसम्बर **फसल उत्पादन**

- गेहूँ की पछेती किस्मों की बुवाई इस माह के प्रथम पखवाड़े तक कर दें। गेहूँ की खड़ी फसल में नत्रजन सिफारिस के अनुसार दें । प्रथम सिंचाई शीर्ष जड़ें निकलने के समय 15-20 दिनों की अवस्था में एवं दूसरी सिंचाई कल्ले निकलने की अवस्था में 40-45 दिनों में दें ।
- चना में फली छेदक कीट की रोकथाम करें। नीम की पत्ती के 10 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें ।
- सरसों में सिंचाई उपलब्ध हो तो 70-80 दिनों की अवस्था पर करें ।
- सभी फसलों को पाले से बचाने हेतु संभव हो तो सिंचाई करें, शाम के समय खेत के दक्षिण पश्चिम कोनों में धुआँ करें ।
- बरसीम व जई चरी फसलों की कटाई करें तथा कटाई करें तथा कटाई के तुरंत बाद सिंचाई करें ।

उद्यानिकी :-

- आम के बगीचे की निंदाई-गुड़ाई करें, थालों की सफाई करें एवं पौधों की उम्र के अनुसार खाद एवं उर्वरक देवें ।
- पपीता में निंदाई-गुड़ाई व सिंचाई करें व पौधों में उर्वरक दें ।
- नींबू वर्गीय फसल, अमरूद, अनार व अंगूर के वृक्षों में पौधों की उम्र के हिसाब से खाद एवं उर्वरक दें ।
- अमरूद व अनार में मिलीबग कीट की रोकथाम करें ।
- मूली के बीज की बुवाई की जा सकती है ।
- सब्जियों व फलों के पौधों को पाले से बचावें ।
- पशुपालन- सूखी घास का बिछौना बिछायें, बोरी लपेटें, पर्दा लगायें व पशुओं को सर्दी से बचायें ।

आगामी तीन माह के प्रस्तावित कार्यक्रम

क्र.	विवरण	संख्या	कृषक संख्या
1.	प्रक्षेत्र प्रदर्शन	8	40
2.	अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन	2	20
3.	अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन	8	80
4.	कृषक प्रशिक्षण	16	400
5.	व्यावसायिक प्रशिक्षण	1	20
6.	कृषि विस्तार अधिकारियों हेतु प्रशिक्षण	4	100
7.	प्रक्षेत्र दिवस	4	200
8.	कृषक संगोष्ठी	4	200
9.	सी.डी. प्रदर्शन	10	250
10.	पशु चिकित्सा कैम्प	2	100
11.	कृषक मेला	1	–
12.	फसल संग्रहालय	1	–
13.	तकनीकी सप्ताह	1	–
14.	दूरदर्शन वार्ता	4	–

चने की वैज्ञानिक खेती

भूमि का चयन- मध्यम एवं भारी भूमियों में चने की खेती की जा सकती है।

भूमि की तैयारी- खेत को 2-3 जुताईयाँ देशी हल अथवा डिस्क हैरो से करें। पाटा लगायें। खेत को खरपतवार रहित कर लें।

बुवाई का समय- असिंचित अवस्था में अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े में बोनी करें । सिंचित अवस्था में बोनी 15 नवम्बर तक की जा सकती है।

बीज की मात्रा- चने की बीज की मात्रा 75 कि.ग्रा. / हेक्टेयर रखें।

बोनी की विधि- बोनी कतारों में देशी हल अथवा सीड-ड्रिल से करें। कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी. रखें ।

उन्नत किस्में- देशी चना-जेजी-11,जेजी-16, जेजी-130, जेजी- 322, जेजी-315, जे.जी.-63।

काबुली चना- काक-2, जे.जी.के.-1

बीजोपचार- थामरम 2 ग्राम तथा कार्वेन्डाजिम 1 ग्राम अथवा ट्राइकोडर्मा विरडि 5 ग्राम से प्रति कि.ग्रा. बीज को उपचारित करें। तत्पश्चात राइजोवियम एवं पीएसवी कल्चर प्रत्येक की 20 ग्राम मात्रा प्रति कि.ग्रा.प्रति बीज के हिसाब से उपचारित करें ।

उर्वरक- 20 : 60 : 20 ना.फा.पो. प्रति हेक्टेयर दें। उर्वरक की सम्पूर्ण मात्रा बोने के पहले दें।

सिंचाई- एक सिंचाई उपलब्ध होने पर बोने के 35 दिन बाद फूल आने के पहले दें। दो सिंचाई उपलब्ध होने पर पहली सिंचाई बुवाई के लगभग 35 दिन बाद तथा दूसरी सिंचाई घेंटियों में दाना भरते समय अथवा बुवाई के 70 दिन बाद करना चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण- बुवाई के 25-30 दिन बाद हाथ द्वारा निदाई करें।

पौध संरक्षण-

उकटा रोग- इस रोग में नये पौधे मुरझाकर मर जाते हैं। सामान्यतः यह रोग लगभग 30-35 दिन की अवस्था में आता है। रोगी पौधा के तनों के नीचे वाले भाग को चीरकर देखने से आंतरिक तन्तुओं में हल्का भूरा या काला रंग दिखाई देता है।

रोकथाम- जड़ तथा तने वाले रोगों की रोकथाम के लिये खेत की गर्मी में गहरी जुताई करे। एक ग्राम वीटा वैक्स कवकनाशी अथवा 5 ग्राम ट्राइकोडर्मा विरिडी प्रति कि.ग्रा. बीज को उपचारित करें।

चने की इल्ली- चने की फसल को इल्ली से बहुत अधिक हानि होती है इसका रंग सामान्यतः हरा होता है।

नियंत्रण- क्विनालफास 25 ई.सी. 1 लीटर को 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़के। आवश्यकता पड़ने पर 15 दिन बाद पुनः छिड़काव करें। अंग्रजी के अक्षर (T) 'टी' के आकार की 50 खुण्टिया प्रति हे. के हिसाब से खेत में लगाये जिस पर बैठकर चिड़िया इल्लियों को खाती हैं ।

फेरोमेन ट्रेप- एक हेक्टेयर में लगभग 10 फेरोमैन ट्रेप लगाये ।

उपज- 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर।

डा. शैलेन्द्र सिंह गौतम
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
(उद्यानिकी)

श्री बन्शी लाल साहू
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(गृह विज्ञान)

डा. राकेश कुमार प्रजापति
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(पौध संरक्षण)

डा. संदीप कुमार खरे
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(पशु पालन)

श्री बृजलाल लिटौरिया
(वाहन चालक)

श्री मनोहरलाल चढ़ार
(वाहन चालक)

श्री ऐलिक हेन्री जौन
(संदेश वाहक)

प्रति,

बुक-पोस्ट

.....

.....

.....

प्रेषक :-
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़
टीकमगढ़ (म.प्र.) - 472001
दूरभाष-07683-244934

(Noble Printers-9993268032)

अपना मोबाइल नम्बर लिखवायें, घर बैठे कृषि की नई जानकारी एवं समस्याओं का समाधान पायें । सम्पर्क सूत्र- 07683-244934